NEERAJ®

मध्यकालीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति

B.H.D.G.-175

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* **M.A. Hindi, B.Ed.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

मध्यकालीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Sample Question Paper—1 (Solved) 1

Sample Question Paper—2 (Solved) 1

Sample Question Paper—3 (Solved) 1

क्र.स. | Chapterwise Reference Book | पृष्ठ संख्या

खंड-1 : भक्ति का आविर्भाव

1. भक्ति का उदय 1
2. भक्ति आंदोलन का विकास 7
3. भक्ति साहित्य का परिचय 14

खंड-2 : दक्षिणांचल भक्ति साहित्य (भाग-1)

4. तमिल भक्ति काव्य (नम्माल्वार, पेरियाल्वार, कुलशेखर आल्वार तथा आण्डाल) 24
5. तमिल भक्ति काव्य : अप्पर, सुन्दरर तथा माणिक्कवाचकर 32
6. कन्नड़ भक्ति काव्य : बसवेश्वर तथा अक्कमहादेवी 35
7. कन्नड़ भक्ति काव्य : पुरंदरदास तथा कनकदास 39

खंड-3 : दक्षिणांचल भक्ति साहित्य (भाग-2)

8. तेलुगु भक्ति काव्य : शैव एवं निर्गुण धाराएँ 42
9. तेलुगु भक्ति काव्य (वैष्णव भक्ति काव्य : राम और कृष्ण काव्य) 47
10. मलयालम भक्ति काव्य : चेरूश्शेरी एवं एषुत्तच्छन 53

खंड-4 : पश्चिमांचल भक्ति साहित्य

11. मराठी भक्ति साहित्य : ज्ञानेश्वर, नामदेव 58
12. मराठी भक्ति साहित्य : तुकाराम, चोखामेळा 66
13. गुजराती भक्ति साहित्य–I : नरसी मेहता, प्रीतमदास, दयाराम 72
14. गुजराती भक्ति साहित्य : प्रेमानंद, अखोभगत 79

खंड-5 : पूर्वांचल भक्ति साहित्य

15. बांगला भक्ति साहित्य : चंडीदास और ज्ञानदास 84
16. बांगला भक्ति साहित्य : गोविंददास और बलरामदास 89
17. असमिया भक्ति साहित्य : शंकरदेव एवं माधवदेव 95
18. ओड़िया भक्ति साहित्य : बलरामदास, जगन्नाथदास, अच्युतानंददास 102

खंड-6 : उत्तरांचल भक्ति साहित्य

19. कश्मीरी भक्ति काव्य : लल्लेश्वरी, परमानंद तथा शेखनुरुद्दीन 107
20. सिन्धी भक्ति काव्य : शाह अब्दुल लतीफ, चैनराइ सामी 111
21. पंजाबी भक्ति काव्य : गुरु नानकदेव, गुरु अर्जुनदेव व गुरु तेगबहादुर 115

खंड-7 : हिंदी भक्ति साहित्य (भाग-1)

22. सिद्ध एवं नाथ साहित्य : सरहपा एवं गोरखनाथ 119
23. ज्ञानाश्रयी काव्य 125
24. प्रेमाश्रयी सूफी काव्य : जायसी, कुतुबन, मंझन 130
25. भारत में निर्गुण काव्य की परम्परा 135
26. भारत में राम भक्ति साहित्य 140
27. भारत में कृष्ण भक्ति साहित्य 146

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

मध्यकालीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति

B.H.D.G.-175

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट: *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. भक्ति संबंधी विभिन्न दार्शनिक मतों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'भक्ति संबंधी विभिन्न दार्शनिक मत'

प्रश्न 2. भक्ति आंदोलन की सीमाओं और परिणति पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-8, 'भक्ति आंदोलन की सीमाएँ और परिणति'

प्रश्न 3. दक्षिणांचल भक्ति काव्य को विश्लेषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-15, 'दक्षिणांचल भक्ति काव्य', पृष्ठ-21, प्रश्न 3

प्रश्न 4. चेरुश्शेरी और एषुत्तच्छन के काव्यों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-54, 'काव्य वाचन'

प्रश्न 5. गुजराती भक्ति साहित्य का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-72, 'गुजराती भक्ति साहित्य का परिचय'

प्रश्न 6. ज्ञानदास की काव्यगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-86, प्रश्न 6

प्रश्न 7. असमिया भक्ति साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-95, 'असमिया भक्ति साहित्य का संक्षिप्त परिचय'

प्रश्न 8. ओड़िया भक्ति साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-105, प्रश्न 1

प्रश्न 9. लल्लेश्वरी के जीवन परिचय एवं कृतित्व को विश्लेषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-110, प्रश्न 4, पृष्ठ-107, 'लल्लेश्वरी : जीवन परिचय एवं कृतित्व'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) गुरु अर्जुन देव

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-21, पृष्ठ-117, अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न 1 'गुरु अर्जुनदेव'

(ख) दादूदयाल

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-23, पृष्ठ-126, 'दादूदयाल'

(ग) कुतुबन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-24, पृष्ठ-131, 'कुतुबन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व', कुतुबन : काव्य वाचन व विशेषताएँ'

(घ) पंजाबी का रामभक्ति साहित्य

उत्तर–पंजाबी साहित्य में राम भक्ति संबंधी रचनाएं प्रस्तुत की गई हैं। सिख गुरुओं ने भी राम भक्ति को प्रश्रय प्रदान किया है। पंजाबी भाषा की सर्वश्रेष्ठ रचना पंजाबी रामायण लगभग अठारहवीं शताब्दी के अंत में लिखी हुई, जिसके कवि हैं–रामलुभाया आनंद दिलशाह। इस रामायण की लोकप्रियता तथा प्रसिद्ध इसमें वर्णित बारहमासे के वर्णन के कारण है, जिसकी तुलना हिंदी के किसी भी बड़े कवि के वर्णन से की जा सकती है। इसके अतिरिक्त राम भक्ति धारा से संबंधित कोई अन्य उल्लेखनीय रचना इस भाषा में नहीं दिखाई पड़ती।

(ङ) शिवभक्ति के दर्शन का संक्षिप्त परिचय

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-33, 'प्रश्न 1, प्रश्न 2, (अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न)

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

मध्यकालीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति

B.H.D.G.-175

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. भक्ति के उदय की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'भक्ति का उदय'

प्रश्न 2. भक्ति काव्य के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-18, प्रश्न 5

प्रश्न 3. तमिल भक्ति काव्य के सामाजिक संदर्भों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-30, प्रश्न 5

प्रश्न 4. पुरंदरदास और कनकदास के युग की पृष्ठभूमि का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-40, प्रश्न 1, (अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न)

प्रश्न 5. तुकाराम के काव्य की सामाजिकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-66, 'तुकाराम काव्य का सामाजिक पक्ष', पृष्ठ-69, प्रश्न 1, प्रश्न 4

प्रश्न 6. चंडीदास के काव्य की विशेषताओं पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-86, प्रश्न 4, पृष्ठ-87, प्रश्न 1

प्रश्न 7. चैतन्योत्तर युग के श्रेष्ठ कवि गोविन्ददास के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-92, प्रश्न 7, पृष्ठ-90, 'गोविंददास काव्य का शिल्प पक्ष'

प्रश्न 8. असमिया भक्ति साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-95, 'असमिया भक्ति साहित्य का संक्षिप्त परिचय'

प्रश्न 9. पंचसखाओं की भक्ति-भावना का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-104, प्रश्न 1, (अभ्यास प्रश्न)

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) कश्मीरी भक्तिकाव्य में समाज एवं संस्कृति

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-110, प्रश्न 3

(ख) गुरु तेग बहादुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-21, पृष्ठ-117, अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न 1 'गुरु तेग बहादुर'

(ग) निर्गुण काव्य की विशेषताएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-25, पृष्ठ-138, प्रश्न 1

(घ) वेमना का जीवन परिचय

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-43, 'वेमन्ना : जीवन परिचय एवं रचनाएँ'

(ङ) चोखामेल्ला काव्य का दार्शनिक पक्ष

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-67, 'चोखा मेला काव्य का दार्शनिक पक्ष'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मध्यकालीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति

भक्ति का उदय

1

परिचय

भक्ति युग भारतीय इतिहास का गौरवशाली और समृद्धिशाली काल रहा है। इस अध्याय में भक्ति के अर्थ एवं स्वरूप, भक्ति के नौ साधनों एवं उसके विभिन्न रूपों, भक्ति के उदय, भक्ति संबंधी दार्शनिक मत, जैसे–अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद एवं शुद्धाद्वैतवाद, निर्गुण भक्ति मत आदि का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। भक्ति ईश्वर को पाने का सरल साधन है और भक्ति के अनेक स्वरूप हैं। भक्ति संबंधी विभिन्न दार्शनिक मत हैं, जिनका उल्लेख अध्याय में किया गया है।

अध्याय का विहंगवलोकन

भक्ति का अर्थ एवं स्वरूप

भक्ति का अर्थ

'भक्ति' शब्द संस्कृत की 'भज्' धातु से निकला है। 'भक्ति' शब्द का अर्थ ईश्वर का भजन-पूजन करना, उससे प्रेम करना और उसे अपना सर्वस्व समर्पित कर देना है। नारदमुनि के 'भक्ति सूत्र' में भक्ति को परम प्रेमरूपा तथा अमृत स्वरूपा कहा गया है।

भक्ति का स्वरूप

भक्ति ईश्वर प्राप्ति का सबसे सरल साधन है। भक्ति में भक्त ईश्वर से केवल प्रेम करता है और वह अपना सर्वस्व ईश्वर को समर्पित कर देता है अर्थात भक्ति में प्रेम और समर्पण ही महत्त्वपूर्ण है।

भक्ति के विभिन्न साधन

भारतीय वैष्णव भक्ति परंपरा में नवधा भक्ति को पर्याप्त ख्याति प्राप्त है। भागवत पुराण में भक्ति के नौ प्रकारों का उल्लेख किया गया है, वे हैं–

(i) श्रवण,
(ii) कीर्तन,
(iii) पाद सेवन,
(iv) अर्चना,
(v) वंदना
(vi) दास्य,
(vii) सख्य,
(viii) स्मरण तथा
(ix) आत्मनिवेदन।

अत: भक्ति के विभिन्न साधनों ने वैष्णव भक्ति को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया।

भक्ति के विभिन्न रूप

भक्तिकाल में ईश्वर के भक्तों व ईश्वर-भक्त कवियों ने ईश्वर के साथ दास्य, सख्य, वात्सल्य, माधुर्य एवं शांत भाव के रूप में अपना संबंध जोड़कर अपनी भक्ति भावना को अभिव्यक्त किया है।

दास्य भाव–दास्य भाव में भक्त ईश्वर को स्वामी तथा स्वयं को ईश्वर का सेवक मानता है। तुलसी, अक्रूर, हनुमान एवं विभीषण ने इसी भाव से ईश्वर की भक्ति की है।

सख्य भाव–इस भाव में भक्त ईश्वर को अपना मित्र मानता है। सूरदास की भक्ति सख्य भाव की भक्ति है। अर्जुन, उद्धव तथा गोप भी इसी श्रेणी के भक्त हैं।

वात्सल्य भाव–भगवान के बाल रूप का गुणगान करने पर वात्सल्य भाव प्रकट होता है। सूरदास ने कृष्ण के बाल रूप का वर्णन कर वात्सल्य रस युक्त भक्ति की है। नंद और यशोदा इसी श्रेणी के भक्त हैं।

माधुर्य भाव–माधुर्य भाव की भक्ति में भक्त ईश्वर को प्रियतम के रूप में मानता है। यह दो प्रकार की है–सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति। सगुण भक्ति करने वाले प्रमुख कवि हैं–सूरदास और तुलसीदास। निर्गुण भक्ति करने वाले भक्त कवि हैं–कबीर। मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की है। उन्होंने कृष्ण को अपना पति माना।

भक्ति का उदय

भक्ति का उदय प्रत्यक्ष रूप से सर्वप्रथम दक्षिण भारत में अवश्य हुआ, किंतु इसका बीजारोपण वेदों में ही हो चुका था, जो यथोचित समय पाकर दक्षिण में अंकुरित हुआ। वेदों और वेदान्त से ईश्वर भक्ति के कुछ मार्ग ज्यों-के-त्यों स्वीकार किए गए हैं। पुराणों एवं श्रीमद्भागवद्गीता में भी भक्ति पर विचार किया गया है।

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

वेदों में भक्ति

'ऋग्वेद' में भक्ति को शांडिल्य के भक्ति-सूत्र के समान ही अनुरक्तिमयी कहा गया है। यहाँ कहा गया है, ''मैं सारे प्राणियों को मित्र के समान देखूँ तथा सारे प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखने वाले हों।''

वेदों में भक्त ईश्वर के प्रति विनय एवं निवेदन का भाव रखता है। लिखा है–

"यो भूतं च भव्यं च सर्व 'चाधितिष्ठति। स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।'' अर्थात् जो परमेश्वर भूत, भविष्य और वर्तमान का अधिष्ठाता है, सर्वव्याप्त है, निर्विकार है, उस ईश्वर को मेरा प्रणाम है।

उपनिषदों में भक्ति

उपनिषदों के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति, उसका सान्निध्य, उसकी कृपा से ही प्राप्त होता है। ईश्वर शास्त्रीय ज्ञान, व्याख्यान तथा पांडित्य से प्राप्त नहीं होता है। ईश्वर भक्ति ही सर्वोत्तम रस है और हमें ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए।

पुराणों में भक्ति

देवी भागवत पुराण में कर्म योग, ज्ञान योग तथा भक्ति योग में भक्ति योग को ही सहज प्राप्य बताया गया है। भागवत पुराण में भक्ति की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि ''जिनकी जिह्वा के अगले भाग में तुम्हारा ही नाम रहता है, वे चांडाल होने पर भी श्रेष्ठ हैं, उन्होंने तपस्या कर ली है, उन्होंने हवन कर लिया, सारे तीर्थों पर स्नान कर लिया, उन्होंने वास्तव में वेदाध्ययन किया, वे ही आर्य हैं।''

भगवद्गीता में भक्ति

श्रीमद्भागवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं अवतारवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि साधु और सज्जन मनुष्यों की रक्षा एवं उनके उद्धार के लिए और दुष्टों के विनाश के लिए तथा लुप्त होते धर्म की स्थापना के लिए मैं प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ। अर्थात भगवान का अवतार साधुओं की रक्षा, दुष्टों के विनाश और धर्म की स्थापना के लिए होता है।

भक्ति संबंधी विभिन्न दार्शनिक मत

ईसा की पाँचवीं शताब्दी तक आते-आते बौद्ध धर्म पतन की ओर चल पड़ा था। ऐसे समय में दक्षिण भारत में आदिजगद्गुरु शंकराचार्य ने वेदों और उपनिषदों की नई व्याख्या करके हिंदू धर्म को नई शक्ति प्रदान की। आगे चलकर कई आचार्यों ने इनका विरोध किया और अपने नए मत प्रस्तुत किए।

अद्वैतवाद

अद्वैतवाद में चूंकि ब्रह्म को ही सत्य माना गया है और जगत को मिथ्या तथा सभी जीव ब्रह्म ही हैं, इसलिए भक्ति संभव नहीं है, क्योंकि भक्ति में भक्त और भगवान की अलग-अलग सत्ता का बोध आवश्यक है।

विशिष्टाद्वैतवाद

विशिष्टाद्वैतवाद में जीव और जगत का ईश्वर से विशिष्ट संबंध माना गया है, इसलिए वहाँ भक्ति का अभाव है।

द्वैताद्वैतवाद

निम्बार्काचार्य ने द्वैताद्वैतवाद नामक मत दिया। निम्बार्काचार्य के अनुसार जीव, जगत और ईश्वर तीनों अलग-अलग हैं। ईश्वर स्वतंत्र है। जीव और जगत परतंत्र हैं।

द्वैतवाद

आचार्य मध्व के अनुसार जीवात्मा और परमात्मा दोनों अलग-अलग चीजें हैं। उनका मानना था कि यह जगत, जीवात्मा और ब्रह्म तीनों की अलग सत्ता है। ये तीनों शाश्वत सत्य हैं।

शुद्धाद्वैतवाद

आचार्य वल्लभ ने 15वीं शताब्दी में शुद्धाद्वैतवाद का प्रवर्तन किया। वल्लभाचार्य के अनुसार जीवात्मा और सांसारिक पदार्थ दोनों ही ब्रह्म (परमात्मा) की अभिव्यक्ति हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मांड ब्रह्म से वैसे ही उत्पन्न हुआ है, जैसे अग्नि से चिंगारी उत्पन्न हुई है।

निर्गुण भक्तिमत का दार्शनिक आधार

निर्गुण संत कवि ईश्वर को निर्गुण और निराकार मानते थे। ईश्वर के अवतारवाद में उन्हें कोई विश्वास नहीं था। उनका ईश्वर आदि-अंत रहित सर्वव्यापक, किंतु इन्द्रियातीत था।

संत काव्य का दार्शनिक आधार

संत काव्य पर बौद्धमत, नाथपंथ, इस्लाम के सूफी संत, अद्वैतमत तथा विशिष्टाद्वैत मत का प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उनका ब्रह्म सर्वव्यापक होने के कारण चराचर में व्याप्त है, अतः वे ईश-भक्ति के लिए किसी मंदिर, मस्जिद, मूर्ति, स्थान आदि की आवश्यकता नहीं समझते थे। निर्गुण ब्रह्म की अनिर्वाच्यता पर बौद्ध मत एवं नाथपंथ का एवं माया, जीव और जगत की अवधारणा पर अद्वैतवाद तथा विशिष्टाद्वैतवाद का प्रभाव है। अतः बौद्ध, नाथ, सूफी, अद्वैत और विशिष्टाद्वैत दर्शन ही संत काव्य की दार्शनिकता के आधार हैं।

सूफी मत

सूफी इस्लाम की एक शाखा का है। विद्वानों के 'सूफी' शब्द की उत्पत्ति के विषय में अलग-अलग मत हैं। कोई इसे 'सफ' (पंक्ति) शब्द से निकला हुआ, कोई इसे 'सूफ' (चबूतरा) शब्द से निकला हुआ, तो कोई इसे ग्रीक शब्द 'सोफिया' से बना मानते हैं। सूफी मत में साधना की चार आवस्थाएं मानी गईं हैं–शरीअत, तरीकत, हकीकत, मारिफत। सूफी मत का आधार प्रेम तत्त्व है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से सही कथन के आगे सही (✓) का निशान लगाइए–

(क) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।

(ख) कठोर तप और साधना का मार्ग भक्ति का मार्ग है।

(ग) ज्ञान, कर्म और योग का मार्ग भक्ति का मार्ग है।

(घ) ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम ही भक्ति है।

उत्तर–(क) सही, (ख) गलत, (ग) गलत, (घ) सही।

प्रश्न 2. नारद के अनुसार भक्ति की परिभाषा क्या है?

उत्तर–नारद के अनुसार भक्ति भगवान के प्रति परम प्रेम है तथा वह अमृत स्वरूप है। अर्थात भक्ति में भक्त भगवान के प्रेम में गोते लगाता है तथा भक्ति भक्त को भवसागर के बंधनों से

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

मुक्त कर उसे अमरत्व प्रदान करती है। तभी तो वे अपने 'भक्ति सूत्र' में कहते हैं–

'सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा अमृतस्वरूपा च।'

प्रश्न 3. ईश्वर प्राप्ति के निम्नलिखित मार्गों का नाम बताइए।

(क) कठोर तप और साधना द्वारा
(ख) ईश्वर संबंधी तत्व-चिंतन द्वारा
(ग) विधि-निषेधों के पालन द्वारा के पालन द्वारा
(घ) ईश्वर के प्रति गहरी अनुरक्ति द्वारा

उत्तर–(क) योग मार्ग, (ख) ज्ञान मार्ग, (ग) कर्म मार्ग, (घ) भक्ति मार्ग।

प्रश्न 4. भक्ति के विभिन्न साधनों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर–श्रीमद्भागवत पुराण में श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, निवेदन भक्ति के इन नौ साधनों का उल्लेख किया गया है।

1. श्रवण–भगवान के नाम, गुण, कीर्तन आदि को सुनना श्रवण कहलाता है।

2. कीर्तन–भगवान के संबंध में व्याख्यान, प्रवचन, स्तवन, स्तोत्र-पाठ एवं कथा आदि कहना कीर्तन कहलाता है।

3. स्मरण–भगवान के नाम, गुण एवं लीलाओं को याद करना स्मरण कहलाता है।

4. पाद-सेवन–लक्ष्मी जी की तरह भगवान के चरणों की सेवा करना पाद-सेवन कहलाता है।

5. अर्चन–पुराणों में वर्णित विधि के अनुसार ईश्वर की पूजा-अर्चना करना अर्चन है।

6. वंदन–भगवान की प्रार्थना करना, उन्हें प्रणाम करना वंदन कहलाता है।

7. दास्य–स्वयं को भगवान का दास समझना और अनन्य भाव से ईश्वर की सेवा करना दास्य कहलाता है।

8. सख्य–ईश्वर को अपना मित्र और सखा समझना सख्य कहलाता है।

9. निवेदन–स्वयं को पूर्णतः भगवान के चरणों में समर्पित कर देना एवं उनकी शरण में चले जाना निवेदन, आत्म-निवेदन अथवा शरणागति कहलाता है।

प्रश्न 5. 'मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं और सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें।' उक्त कथन किस ग्रंथ। से उद्धृत है तथा इसमें किस विशेषता का भाव छिपा है?

उत्तर–यह कथन 'ऋग्वेद' नामक ग्रंथ से उद्धृत है तथा इसमें भक्त का ईश्वर के प्रति प्रेम, विनम्रता और प्रणयन का भाव है।

प्रश्न 6. 'यह आत्मा उत्कृष्ट शास्त्रीय व्याख्यान के द्वारा उपलब्ध नहीं किया जाता, मेधा के द्वारा प्राप्त नहीं होता। यह जिसको वरण करता है, उसी को प्राप्त होता है। उसके सामने आत्मा अपने स्वरूप को व्यक्त करता है।' उक्त कथन किस ग्रंथ से उद्धृत है तथा इसमें भक्ति की किस विशेषता का उल्लेख है?

उत्तर–कठोपनिषद् से यहाँ ईश्वर की कृपा का वर्णन है तथा ज्ञान मार्ग और कर्म मार्ग से इसे श्रेष्ठ कहा गया है।

प्रश्न 7. भक्ति के नौ प्रकार के साधनों का उल्लेख किस ग्रंथ में किया गया है?

उत्तर–'भागवत पुराण' में भक्ति के नौ प्रकार के साधनों का उल्लेख किया गया है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित दार्शनिक मतों के प्रवर्तकों के नाम बताइए–

(क) विशिष्टाद्वैतवाद
(ख) द्वैतवाद
(ग) अद्वैतवाद
(घ) शुद्धाद्वैतवाद
(ङ) द्वैताद्वैतवाद

उत्तर–(क) विशिष्टाद्वैतवाद : रामानुजाचार्य
(ख) द्वैतवाद : मध्वाचार्य
(ग) अद्वैतवाद : शंकराचार्य
(घ) शुद्धाद्वैतवाद : वल्लभाचार्य
(ङ) द्वैताद्वैतवाद : निम्बार्काचार्य

प्रश्न 9. विशिष्टाद्वैतवाद में जीव, जगत और परमात्मा के बीच किस तरह के संबंध होते हैं?

उत्तर–शंकराचार्य के परवर्ती दार्शनिकों ने उनके अद्वैतवाद का कड़ा विरोध किया। भास्कराचार्य ने तो इस मत को बौद्ध धर्म के शून्यवाद का नया संस्करण मात्र माना। इसके अतिरिक्त नाथमुनि एवं यमुनाचार्य के शिष्य रामानुजाचार्य (11वीं शताब्दी) ने इस मत का तार्किक जवाब दिया। उनके अनुसार ब्रह्म, जीवात्माएं और भौतिक जगत सब-कुछ सत्य है। ब्रह्म जीवात्माओं एवं जगत दोनों की आत्मा है। वह दोनों को पालित-पोषित और नियंत्रित करता है। जीवात्माएं एवं सम्पूर्ण जगत उसमें ही समाहित है। यह सम्पूर्ण चराचर, सूक्ष्म और स्थूल, चित्त और अचित्त उस सर्वशक्तिमान ब्रह्म के ही अभिन्न अंग हैं।

के. दामोदरन के अनुसार 'विशिष्टाद्वैत' का अर्थ है, एक अपरिचित ब्रह्म का स्वयं अपने स्पष्ट, भिन्न और परिमित (विशिष्ट) अंगों से एकाकार होना।' रामानुज का मानना है कि केवल वेद-मंत्रों को रटकर दोहराने से ज्ञान प्राप्त नहीं होता, ज्ञान तो ईश्वर की भक्ति से ही प्राप्त होता है और सच्ची भक्ति निष्काम कर्म करने से शुरू होती है।

प्रश्न 10. लौकिक प्रेम द्वारा ईश्वरीय प्रेम की अभिव्यक्ति किस मत में बताई गई है? उस मत के अनुसार ईश्वर की अवधारणा क्या है, यह भी बताइए?

उत्तर–सूफी मत में ईश्वरीय प्रेम की अभिव्यक्ति लौकिक प्रेम द्वारा बताई गई है। यह सृष्टि ईश्वर की ही अभिव्यक्ति है और इसके समस्त क्रियाकलापों में वह सूक्ष्म रूप में विद्यमान है।

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से सही कथन के आगे सही का निशान (✓) लगाइए–

(क) शंकराचार्य के अनुसार जब तक मनुष्य माया के जाल में फंसा रहता है तभी तक वह वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति से अनभिज्ञ रहता है।
(ख) रामानुज के अनुसार जाति प्रथा का कट्टरता से पालन किये बिना भक्ति असंभव है।

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ग) निम्बार्क के अनुसार सृष्टि ईश्वर की लीला है।

(घ) भगवान का अनुग्रह पुष्टि मार्ग है।

(ङ) निर्गुण मत में शास्त्रों के वचनों और धार्मिक विधि-निषेधों के पालन पर विशेष जोर दिया गया है

उत्तर–(क) सही, (ख) गलत, (ग) सही, (घ) सही, (ङ) गलत।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भगवद्गीता में व्यक्त भक्ति का संक्षेप में विवेचन कीजिए।

उत्तर–गीता में भगवान ने स्वयं स्पष्ट रूप से कहा है कि ईश्वर की भक्ति सर्वोत्तम है। जो भक्त एकाग्र मन से ईश्वर को भजता है, उससे बड़ा योगी नहीं है। वे कहते हैं जो अनन्य प्रेम से परमेश्वर को निरंतर निष्काम भाव से भजते हैं, उनका योग-क्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ। उन्हें बाधाओं से बचाकर उनकी रक्षा करता हूँ। उनके लिए प्रत्येक साधन को जुटाता हूँ। वे अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन! तू अपने सारे धर्मों को मुझे अर्पित कर मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा। तू शोक मत कर।

प्रश्न 2. गीता में व्यक्त अवतारवाद के सिद्धांत का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–यूँ तो पूरी श्रीमद्भगवद्गीता में भक्ति का वर्णन किया गया है, किंतु इसके अध्याय सात से अध्याय बारह तक भक्ति का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके दूसरे अध्याय में आत्मनिवेदन, तीसरे अध्याय में समर्पण तथा चतुर्थ अध्याय में भगवान के अवतारवाद का वर्णन हुआ है, जैसे–

"परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥'

यहाँ भगवान ने कहा है कि जो भक्त मुझे जिस रूप में भजते हैं, मैं भी उनको उसी रूप में भजता हूँ 'ये यथा में प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यह।' कहने का तात्पर्य है कि भगवान की भक्ति किसी रूप में की जा सकती है। 9वें अध्याय में भगवान का यह कथन–'मद्भक्तो भव' स्पष्ट करता है कि भगवान की प्राप्ति किसी भी तरह से की जा सकती है, किंतु भक्ति करना परमावश्यक है।

प्रश्न 3. अद्वैतवाद और विशिष्टाद्वैतवाद की तुलना करके बताइए कि क्या अद्वैतवाद के अनुसार भक्ति संभव है?

उत्तर–अद्वैतवाद–अद्वैतवाद की स्थापना आदिजगद्गुरु शंकराचार्य ने आठवीं शताब्दी में की थी। आदिगुरु शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भागवद्गीता तथा उपनिषदों के भाष्य लिखकर जीव और ब्रह्म में अद्वैत संबंध स्थापित किया। इन्होंने अपने इस मत में आत्मा और परमात्मा के द्वैत अर्थात दो होने से इन्कार किया था। उनका मानना था कि परमात्मा और जीवगत आत्मा एक ही है। जीव और जगत भ्रम मात्र है। यह माया है। मानव माया में फँसकर जीव और चराचर को सत्य समझ लेता है। माया के नष्ट होते ही जीवात्मा 'अहं ब्रह्मास्मि' का अनुभव करती है। माया के नाश के लिए मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि ज्ञान अथवा यथार्थ के संज्ञान होने से माया का नाश होता है तथा जीवात्मा परमात्मा से एकाकार हो जाती है।

विशिष्टाद्वैतवाद–विशिष्टाद्वैतवाद में जीव, जगत और परमात्मा के बीच अंग-अंगी संबंध माना गया है, जैसे–हाथ, पैर आदि शरीर के अंग होते हुए भी उनको भिन्न कहा जा सकता है।

हाँ, अद्वैतवाद के अनुसार भक्ति संभव है, जिसमें ईश्वर के निराकार रूप में आत्मा और परमात्मा को एक मानकर भक्त ईश्वर की भक्ति माया के जाल से मुक्त होकर करता है।

प्रश्न 4. निर्गुण संत मत में ब्रह्म, माया और जीव के संबंध में व्यक्त विचारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–निर्गुण संत मत के भक्त कवि ईश्वर के अवतारवाद में विश्वास नहीं करते थे। अतः उन्होंने कर्मकांडों का भी विरोध किया। उन्होंने निर्गुण ब्रह्म की उपासना श्रेयस्कर समझी। निर्गुण में ब्रह्म के विषय में अलग-अलग मत मिलते हैं। कबीर ने अद्वैत ब्रह्म, सगुण राम एवं नाथ पंथ के अलख को एक साथ मिला दिया। उसे विष्णु, हरि, माधव से संबोधित किया है, किंतु उनका परम तत्त्व सगुण राम नहीं। वे नित्य, अरूप, अनाम एवं सर्वव्यापक हैं। वह अलख है, निराकार है। वह न सूक्ष्म है और न स्थूल। उसका कोई रूप-रंग, आकार-प्रकार नहीं है। वह न दृश्य है न अदृश्य है। वह अगम और अगोचर है। वह पाप और पुण्य से दूर रहता है।

निर्गुण संत मत में 'माया' शब्द का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। शंकराचार्य ने 'माया' शब्द का दार्शनिक विवेचन किया है। संत कवियों ने भी माया की सत्ता स्वीकार की है। उन्होंने माया को परम सुंदरी एवं विश्वमोहिनी के रूप में स्वीकार किया है। वह मानव को ठगती और फँसाती है। वह सृष्टि का कारण है। सांसारिक संबंधों की जननी है। परमतत्व की लीला है। निर्गुण संत मत के जीव के संबंध पर भी अद्वैतवाद का प्रभाव है। वे जीव को ईश्वर का अंश तो मानते हैं, किंतु उसकी पृथक सत्ता 'घड़े के जल' की भांति स्वीकार करते हैं। जैसे घड़े में रखा पानी घड़े के अंदर होते हुए भी घड़े में नहीं है, वह वहीं है जहाँ घड़ा नहीं है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. भक्ति के अर्थ एवं स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संस्कृत की 'भज्' धातु से 'भक्ति' शब्द निष्पन्न हुआ है। 'भक्ति' शब्द का अर्थ ईश्वर का भजन-पूजन करना, उससे प्रेम करना और उसे अपना सर्वस्व समर्पित कर देना है अर्थात ईश्वर के प्रति भक्त की प्रेमाभिव्यक्ति ही भक्ति है।

नारद मुनि ने अपने 'भक्ति सूत्र' में भक्ति को परम प्रेमरूपा तथा अमृत स्वरूपा कहा है, जैसे–''सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा अमृतस्वरूपा च।'' शाण्डिल्य ने भी अपने 'भक्ति सूत्र' में भक्ति को ईश्वर के प्रति परम अनुरक्ति (प्रेम) कहा है–'सा परानुरक्तिरीश्वरे' अर्थात् ईश्वर के प्रति गहरा प्रेम ही भक्ति है। एक भक्त ईश्वर की भक्ति द्वारा सिद्धत्व प्राप्त करता है तथा वह सदा के लिए अमर एवं पूर्ण तृप्त हो जाता है। वह सांसारिक सुख-दुख, ईर्ष्या एवं राग-द्वेष से ऊपर उठ जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेम

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com